THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182441
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81·6 B57N Accession No. H360

Author भटनागर, महेन्द्र.

Title नई चेतना. 1956.

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रकाशक

श्रीअजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लि०

पटना-४

प्रथम संस्करण, १९५८

मूल्य—दो रुपए

मुद्रक

श्री राजेश्वर झा

श्रीअजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लि०

पटना-६

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१	बिजलियां गिरने नही देगे	... ...	१
२	ललकार	... ...	३
३	आजादी का त्योहार	... ...	४
४	अपराजित	... ...	६
५.	चेतना	... ...	८
६.	काटो धान	... ...	१०
७	रोक न पाओगे	... ...	१४
८.	जागते रहेगे	... ...	१५
९	नया इसान	... ...	१८
१०.	आंधी	... ...	२०
११.	झझावात	... ...	२२
१२.	नव-निर्माण	... ...	२४
१३.	जिन्दगी का कारवाँ	... ...	२६
१४	बढते चलो	... ...	२८
१५.	नए इमान से तटस्थ वर्ग	... ...	३०
१६.	नई दिशा	... ...	३२
१७	परम्परा	... ...	३७
१८.	गन्तव्य	... ...	३९
१९.	क्या हुआ ?	... ...	४१
२०	दूर खेतो पार	... ...	४२
२१.	युग और कवि	... ...	४८
२२.	विश्वास	... ...	८७

२३. आश्वस्त	...	...	४८
२४. दीपक जलाओ	...	...	५०
२५. आभास होता है	...	...	५२
२६. आज देखा है	...	...	५४
२७. मुझे भरोसा है	...	...	५६
२८. मुख को छिपाती रही	...	...	५८
२९. नया समाज	...	...	६०
३०. युगान्तर	...	...	६२
३१. छलना	...	...	६४
३२. मत कहो	...	...	६६
३३. नया युग	...	...	६८
३४. पदचाप	...	...	७०
३५. भोर का आह्वान	...	...	७२
३६ निरापद	...	....	७४
३७. मुखियाँ निहार लो !	...	...	७५
३८. युग-परिवर्तन	...	...	७७
३९. नई सस्कृति	...	..	७९
४०. गगा बहाओ	...	...	८२
४१. नई रेखाएँ	...	...	८३
४२. भविष्य के निर्माताओ !	...	...	८५
४३. मेघ-गीत	...	...	८८
४४. बरगद	...	....	९०
४५. कवि	...	...	९२

महेन्द्र भटनागर

प्राक्कथन

'नई चेतना' मेरी चुनी हुई पैंतालीस कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं का रचना-काल सन् १९५० से १९५३ तक का है।

मेरे कवि-जीवन के लगभग पन्द्रह वर्ष समाप्त होने आए। इतनी अवधि में मैंने जो कुछ लिखा वह कोई योजनाबद्ध नहीं है। जीवन में वैयक्तिक और सामाजिक संघर्षों के बीच जब-जब मुझसे न रहा गया और अवकाश मिला मैंने अपने भावों को कविता में व्यक्त किया। कविता को ही, भावाभिव्यक्ति का माध्यम मैंने क्यों चुना; इसका कारण मैं खोज नहीं पाता। सम्भवत., भावाभिव्यक्ति का सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम होने के कारण, कविता मेरे जीवन का अंग बन गई।

विषय और रचना-काल को दृष्टि में रखकर 'नई चेतना' की कविताओं का संकलन किया गया है। ये सभी कविताएँ समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। इनमें से कई प्रमुख योरोपीय और भारतीय भाषाओं में अनूदित तथा देश और विदेश के आकाशवाणी-केन्द्रों से प्रसारितभी हो चुकी हैं। नई हिन्दी-कविता के संकलनों में भी 'नई चेतना' की कुछ कविताओं को स्थान मिला है।

'नई चेतना' की पाण्डुलिपि को जिन विद्वानों ने पढ़कर मुझे सम्मतियाँ दीं उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। आशा है, अन्य समीक्षक उन सम्मतियों के कारण मेरे और मेरी पुस्तक के प्रति अपने हृदय में किसी पूर्वग्रह को स्थान न देंगे और उनका उचित मूल्यांकन करेंगे।

कहना न होगा कि मेरा संबध प्रगतिशील कविता से जोड़ा जाता है और प्रगतिशील कविता को काफी लोग भ्रमवश अथवा जान-बूझकर 'साम्यवादी' कविता मान कर चलते हैं। स्पष्ट है, मेरी कविताएँ मात्र 'साम्यवाद' की श्रेणी में नहीं आतीं; इससे उस वर्ग की मात्र सहानुभूति ही मुझे मिलती है और साम्यवादी वर्ग के विरोधी साहित्यकारों की उपेक्षा। मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ जब हमारे आलोचक भ्रांत धारणाओं से मुक्त नई हिन्दी-कविता का यथार्थ मूल्यांकन करेंगे। आलोचकों से बड़ा वर्ग पाठकों का है। यदि 'नई चेतना' पाठकों को अपने प्रति आकर्षित कर सकी तो मुझे सर्वाधिक संतोष होगा।

अंत में आलोचकों और पाठकों से यह निवेदन है कि 'नई चेतना' में कविताएँ जिन रूपों में प्रकाशित हैं उन्हें ही वे प्रामाणिक मानें— विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पूर्व-प्रकाशित रूपों में नहीं; क्योंकि मैंने उनमें समय-समय पर अनेक परिवर्तन किये हैं। 'नई चेतना' की पाण्डुलिपि भी, इसी कारण, मुझे कई बार, बदल-बदल कर, तैयार करनी पड़ी।

माधव महाविद्यालय
उज्जैन (म० भा०)
२६ जून, १९५६

महेन्द्र भटनागर

नई चेतना

बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे

कुछ लोग चाहे ज़ोर से कितना
बजाएँ युद्ध का डंका
पर, हम कभी भी शांति का झंडा
ज़रा झुकने नहीं देंगे !
हम कभी भी शांति की आवाज़ को
दबने नहीं देंगे !
क्योंकि हम इतिहास के आरम्भ से
इंसानियत में,
शांति में विश्वास रखते हैं,
गौतम और गांधी को हृदय के पास रखते हैं !
किसी को भी सताना
पाप सचमुच में समझते है,
नहीं हम व्यर्थ में पथ में
किसी से जा उलझते हैं ।

नई चेतना

हमारे पास केवल
विश्व-मैत्री का
परस्पर प्यार का सदेश है,
हमारा स्नेह
पीड़ित ध्वस्त दुनिया के लिए अवशेष है !
हमारे हाथ
गिरतो को उठाएंगे,
हजारो मूक, वदी, त्रस्त, नत
भयभीत, घायल औरतों को
दानवों के क्रूर पजो से बचाएगे !
हमें नादान बच्चों की हँसी
लगती बड़ी प्यारी;
हमें लगती
किसानो के गड़रियो के गलों से
गीत की कड़ियाँ मनोहारी !
खुशी के गीत गाते इन गलो मे
हम कराहो और आहों को
कभो जाने नही देगे !
हँसी पर खून के छींटे
कभी पड़ने नहीं देंगे !
नए इंसान के मासूम सपनो पर
कभी भी बिजलियाँ गिरने नहीं देंगे !

*

ललकार

शैतान के साम्राज्य में तूफान आया है,
जो जिन्दगी को मुक्ति का पैगाम लाया है!
इंसान की तकदीर को बदलो,
भयभीत हर तसवीरको बदलो,
हमारे संगठित बल की यही ललकार है।

मासूम लाशों पर खड़ा साम्राज्य हिलता है,
तम चीर कर जन-शक्ति का सूरज निकलता है,
चट्टान जैसे माथ उठते हैं
फौलाद से दृढ़ हाथ उठते हैं,
अमन के शत्रु से जो छीनते हथियार हैं।
हमारे संगठित बल की यही ललकार है।

लो रुक गया रक्तिम प्रखर सैलाब का पानी,
अब दूर होगी आदमी की हर परेशानी।
सूखी लताएँ लहलहाती हैं,
नव-ज्योति सागर में नहाती हैं,
खुशी के मेघ छाए हैं, बरसता प्यार है!
हमारे संगठित बल की यही ललकार है!

❀

आज़ादी का त्योहार

लज्जा ढंकने को
मेरी खरगोश सरीखी भोली पत्नी के पास
नहीं है वस्त्र,
कि जिसका रोना सुनता हूँ सर्वत्र !
घर में, बाहर,
सोते, जगते
मेरी आँखों के आगे
फिर-फिर जाते हैं
वे दो गंगाजल जैसे निर्मल आँसू
जो उस दिन तुमने
मैले आँचल से पोंछ लिए थे !
मेरे दोनों छोटे मूक खिलौनों-से दुर्बल बच्चे
जिनके तन पर गोश्त नहीं है,
जिनके मुख पर रक्त नहीं है,
अभी-अभी लड़कर सोए हैं
रोटी के टुकड़े पर,
यदि विश्वास नहीं हो तो

आजादी का त्योहार

अब भी तुम उनकी लम्बी सिसकी सुन सकते हो
जो वे सोते में रह-रह कर भर लेते हैं !
जिनको वर्षा की ठंडी रातों मे
मैं उर से चिपका लेता हूँ,
तूफानों के अंधड़ में
बाहो में दुबका लेता है !
क्योकि नए युग के सपनो की ये तसवीरें हैं !
बजर धरती पर अकुर उगते धीरे-धीरे हैं !
इनकी रक्षा को
आजादी का त्योहार मनाता हूँ !
अपने गिरते घर के टूटे छज्जे पर
कर्जा लेकर
आजादी के दीप जलाता हूँ !
अपने सूखे अधरों से
आजादी के गाने गाता हूँ !
क्योकि मुझे आजादी बेहद प्यारी है !!
मैंने अपने हाथों से
इसकी सींची फुलवारी है !
पर, सावधान ! लोभी गिद्धो !
यदि तुमने इसके फल-फूलो पर
अपनी दृष्टि गड़ाई,
तो फिर करनी होगी आजादी की
फिर से और लड़ाई !

❀

अपराजित

हो नहीं सकती पराजित युग - जवानी !

संगठित जन - चेतना को,
नव - सृजन की कामना को,
सर्वहारा - वर्ग की युग-
युग पुरानी साधना को,

आदमी के सुख - सपन को,
शांति के आशा - भवन को,
और ऊषा की ललाई
से भरे जीवन - गगन को,

मेटने वाली सुनी है क्या कहानी ?
हो नहीं सकती पराजित युग - जवानी !

अपराजित

पैर इस्पाती बड़े जो
आँधियों से जा लड़े जो,
हिल न पाए एक पग भी
पर्वतों से दृढ़ खड़े जो,

शत्रु को ललकारते हैं,
जूझते हैं, मारते हैं!
विश्व के कर्त्तव्य पर जो
जिन्दगी को वारते हैं।

कब शिथिल होती, प्रखर उनकी रवानी!
हो नहीं सकती पराजित युग-जवानी!

शक्ति का आह्वान करती,
प्राण में उत्साह भरती,
सुन जिसे दुर्बल मनुज की
शान से छाती उभरती,

जो तिमिर में पथ बताती,
हर दिशा में गूंज जाती,
क्रांति का संदेश नूतन
जा सितारों को सुनाती,

बंद हो सकती नहीं जन-त्राण-वाणी!
हो नहीं सकती पराजित युग-जवानी!

चेतना

हर दिशा मे जल उठी ज्वाला नई,
लालिमा जीवन - जगत पर छा गई !

है नई पदचाप से गुंजित मही,
ज्योति अभिनव हर किरण बिखरा रही !

छिन्न सदियो का अँधेरा हो गया,
राह पर जगमग सवेरा है नया !

यह विगत युग का न कोई साज है,
रूप ही बदला धरा ने आज है !

वर्ग - भेदो को मिटाने चेतना
कर रही सामान्य की आराधना !

काल बदला और बदली सभ्यता,
द रही नव फूल संस्कृति की लता !

चेतना

फूल वे जिनमे मधुर सौरभ भरा,
मुसकराती पा जिन्हे भू - उर्वरा।

स्वार्थ, शोषण की इमारत ढह रही,
भग्न - ढूहों पर सृजन-सरि बह रही।

शीत के लघु - ताप से सिकुड़े हुओं,
पास आता जा रहा 'क्यूरो सिवों'।

धूप से झुलसे हुए 'होरी' कृषक
आ रही 'जल की हवा' जीवन-जनक।

उर लगाते जीर्ण 'धनिया' - देह को
(रोक ले रे! छलछलाते स्नेह को!)

आज तो आकाश अपना हो गया।
आदमी का, सत्य सपना हो गया!!

❀

काटो धान

काटो धान, काटो धान,
काटो धान।
सारे खेत
देखो दूर तक कितने भरे
कितने भरे
पूरे भरे!
घिर लहलहाते हैं
न फूले रे समाते हैं!
हवा में मिल
कुसुम-से खिल
उठो, आओ चलो इन जीर्ण कुटियों से
बुलाता है तुम्हे, साथी
खुला मैदान!
काटो धान, काटो धान
काटो धान!

काटो धान

जब हिम-नदी का चू पड़ा था जल
अनेकों धार में चंचल
हिमालय से बहाई जो गई थी धूल
उसमें आज
खिलते रे
श्रमिक तेरे पसीने से सिंचे
प्रति पेड़ की हर डाल में
सित, लाल, पीले, फूल !
जीने के लिए देती तुम्हे
ओ ! आज भू माता
सहज वरदान !
काटो धान, काटो धान,
काटो धान !

आकाश में जब
घिर गए थे
मॉनसूनी - घन
सघन, काले
हृदय सूखे हुए
तब आश-रस से
भर गए थे
झूम मतवाले !
किसी सुन्दर, सलोनी, स्वस्थ, कोमल, मधु

नई चेतना

किशोरी के नयन
कुछ मूक भाषामें
नई आभा सजाए जगमगाए श्वेत-कजरारे!
हुए साकार
भावों से भरे
अभिनव सरल जीवन लिए, नूतन जगत के गान!
काटो धान, काटो धान,
काटो धान!

जो सृष्टि के निर्माण हित
बोए तुम्हारी साधना ने बीज थे
वे पल्लवित
सपने पलक की छाँह में
पा चाह
शीतल ज्योत्सना की गोद में खेले!
(अरी इन डालियों को बाँह में ले ले !)
उठो!
कन्या कुमारी से अखिल कैलाश के वासी
सुनो, गूँजी नई झंकार!
हर्षित हो
उठो परिवार सारे गाँव के देखो
कि चित्रित हो रहे अरमान!
काटो धान, काटो धान
काटो धान!

काटो धान

टूटे दाँत
सूखे केश
मुख पर झुर्रियों की वह सहज मुसकान
प्रमुदित मुग्ध
फैला विश्व में सौरभ
महकता नभ
सजग हो आज
मेरे देश का अभिमान !
काटो धान, काटो धान,
काटो धान !

❀

रोक न पाओगे

जग में आज सुनाई देती आवाज नई,
जिसकी प्रतिध्वनि भू के कण-कण मे गूँज गई!
समझ गए शोषित-पीड़ित जिसका अर्थ सभी,
अब तो जन-शक्ति-विपथ के साधन व्यर्थ सभी!
मूक जनो को आज गिरा का वरदान मिला,
श्रमजीवी-जन को अपना प्यारा गान मिला;
युग-युग की अवरुद्ध उपेक्षित नव-राह खुली,
जन-पथ के सब द्वार खुले जग-जनता निकली!
विजयी घोषों से फट-फट पड़ती है तुरही,
काँप रहा है आज गगन, काँपी आज मही!
विशृंखल, वर्गों की निर्मित सारी कड़ियाँ,
देशकाल की अब सीमा मिटने की घड़ियाँ!
नकली दीवारो! नही रुकेगी नई हवा,
बस कर दो राह कि बचने की है यही दवा!
जर्जर संस्कृति के रक्षक भागो! आग लगी!
इन अँगारो से तो लपटो की धार जगी!
इसको और हृदय से चिपटाना घातक है,
आसक्ति, तुम्हारी ही काया की भक्षक है!

❀

जागते रहेंगे

आग बन गया उपेक्षितों का वर्ग;
कि ढह रहा प्रवंचना का दुर्ग !
पत्थरों के कोयले धधक उठे,
लपट मशाल बन हवा के संग
अंधकार पर प्रहार कर रही !
जगमगा उठी दमित युगों की रात;
पर्व है 'नुशूर' का—
मृतक शरीर कब्र फोड़
जागता है नींद छोड़ !
जंगलों के पेड़ खड़खड़ा उठे !
ये आँधियाँ हैं जो कभी उड़ी नहीं,
ये बिजलियाँ हैं जो कभी गिरी नहीं,
कि बदलियाँ गंभीर जो कभी घिरी नहीं !

नई चेतना

गरज से कड़कड़ा रहा है
दंत पीस क्रुद्ध दिग - दिगन्त !
सगठित समूह की दहाड़ से
नए समाज में
तमाम शोषकों के कागजी पहाड़,
राख हो रहे !
कि जड़ समेत सब उखड़
हवा के तामसी महल सहज में खाक हो रहे !
यह आग है कि
बर्फ की तहों से दब न पायगी,
कि क्षिप्र जल की धार से
कभी भी बुझ न पायगी !
जब तलक है अंधकार शेष इस जमीन पर
तब तलक अमीर खटमलों-सा
चूसता रहेगा निर्धनों का रक्त
हर गली मे भूत की
डरावनी हँसी निराट गूंजती रहेगी तब तलक !
प्रसुप्त
प्रस्तरों की चादरों को छोड़,
प्राशु भाल, प्राज्य शक्ति, ध्रुव प्रतीति ले
उठा रहा प्रहारना का अस्त्र !
है असाँच - गर्व मृत,
असार अस्तमन, विधुर, विपन्न;
अब विभीषिका-विभावरी
विभास से विभीत पिंगला !

जागते रहेंगे

नवीन ज्योति का सशक्त कारवाँ चला,
कि गिर रहा है टूट-टूट कर
कदम-कदम पर अंधकार !
जागते रहेंगे हम,
कि जब तलक यह रुद्ध-राह-द्वार खुल न जायगा,
यह वर्ग भेद, जाति-द्वेष मिट न जायगा,
हमारी धमनियों में
खून खौलता रहेगा तब तलक !

❀

नया इंसान

आज नया इंसान, पड़ी चरणों की, तोड़ रहा जंजीर।

उबल उठा है स्वस्थ युगों की ताक़त का उन्माद,
जन-जन के बंदी जीवन को करने को आज़ाद,
उजड़े ध्वस्त घरों को फिर से करना है आबाद,

आगे बढ़ना है सदियों का यह छाया सघन अँधेरा चीर !
आज नया इसान, पड़ी चरणो की, तोड़ रहा जंजीर !

हिलते महलों की दीवारो से आती आवाज,
भय से ग्रस्त कि मानो हो ही गिरने वाली गाज,
मिटनेवाला है अब जग का शोषक-जीर्ण-समाज,

निश्चय, अब रह न सकेंगे दुनिया में आदमखोर अमीर !
आज नया इंसान, पड़ो चरणो की, तोड़ रहा जजीर !

जनबल के कदमों की आहट से गूँजा संसार,
दुर्बल बन दुश्मन का वक्ष दहलता है हर बार,
खुलते जाते अवरुद्ध-पंथ के लो सारे द्वार,
अब धार नहीं बाकी, खा जंग गई सामंती - शमशीर !
आज नया इंसान, पड़ी चरणों की, तोड़ रहा जंजीर !

सत्य प्रखर अब संमुख आया, जीत गया विश्वास,
वांछित नवयुग पास कि लुप्त हुआ पिछला आभास,
अब रखनी न सुरक्षित मन में कोई खोई आस,
दुनिया के परदे पर हर मानव की आज नई तसवीर !
आज नया इंसान, पड़ी चरणों की, तोड़ रहा जंजीर !

❀

आँधी

बड़ा शोर करती उठी आज आँधी,
क्षितिज से क्षितिज तक घिरी आज आँधी !

समुन्दर जिसे देखकर खिलखिलाया,
निखिल सृष्टि काँपी प्रलय - भय समाया !

पुराने भवन सब गिरे लड़खड़ाकर,
बड़ी तेज आईं हवाएँ हहर कर !

दिवाकर किसी का छिपा थाम दामन,
दहलता भयावह बना विश्व - आँगन !

उमड़ता नए जोश में वन्य - दरिया,
लहरता नवल होश में वन्य - दरिया !

रुकेगी न आँधी सरीखी जवानी,
बना कर रहेगी नई ही कहानी !

आँधी

असम्भव कि ठहरे रुकावट पुरानी !
शिथिल हो न पाई कभी भी रवानी !

न रोके रुकेगी बड़ी शक्तिशाली,
न फीकी पड़ेगी कभी द्रोह लाली !

कि चीलें उतरतीं चली आ रही हैं,
अँधेरी घटाएँ घुमड़ छा रही हैं !

मगर खोल सीना अकेला डगर पर
बढ़ा जा रहा जूझता जो निरन्तर,

वही व्यक्ति दृढ़ शक्ति-युग का तरुण है !
बदलना धरा को कि जिसकी लगन है !!

विरोधी रुकावट मिटाता चला जो,
नदी शांति की नव बहाता चला जो,

वही क्रांति आभास - द्रष्टा सदा से,
वही विश्व - इतिहास - सृष्टा सदा से !

उसी की सबल मुक्त लंबी भुजाएँ
नए खून से मोड़ देंगी हवाएं !

झंझावात

पूरब में नई जन - चेतना का
आज झञ्झावात आया है !
अमिट विश्वास ने
इसान के उर में,
बड़ा मजबूत
अपना घर बनाया है !
तभी तो—
दुश्मनों के शक्तिशाली दुर्ग पर
क्रोधित हवाएँ
दौड़तीं ललकारतीं
जा जूझ टकराईं,
कि जिससे दुर्ग के
प्राचीर, गुम्बज, कोट
होते हैं धराशाई !
उभरती शक्ति जनता की
दबाए अब नहीं दबती,
धधकती द्रोह की ज्वाला
बुझाए अब नहीं बुझती !

अथक संघर्ष चारो ओर
नूतन जिन्दगी का है,
कि नूतन जिन्दगी वह जो
मिटाए मिट नहीं सकती!
गगन को घेर कर
चिनगारियाँ जिसकी
चमकती और उड़ती हैं,
उसीके ताप से
फौलाद की दृढ शृंखलाएँ इस
मुड़ती हैं!
बड़ी गहरी घटाए
आसमानों पर घुमड़ती है!
न सरकेगी कभी चट्टान
जिस पर उठ रही
दुर्भेद्य नव दीवार।
हिंसक भेड़ियो
नंगे लुटेरो की
कहीं नीचे दबी है लाश;
होगी सर्वहारा-वर्ग की
निश्चय सुरक्षा;
क्योंकि
आया आज पूरब मे
नई जन - चेतना का
तीव्र झंझावात!

❀

नव-निर्माण

मैं निरंतर राह नव-निर्माण करता चल रहा हूँ,
और चलता ही रहूँगा !

राह—जिस पर कंटको का
जाल, तम का आवरण है,
राह—जिस पर पत्थरों की
राशि, अति दुर्गम विजन है,
राह—जिस पर बह रहा है
टायफूनी - स्वर - प्रभंजन,
राह—जिस पर गिर रहा हिम
मौत का जिस पर निमत्रण,

मैं उसी पर तो अकेला दीप बनकर जल रहा हूँ,
और जलता ही रहूँगा !

मैं निरंतर राह नव-निर्माण करता चल रहा हूँ,
और चलता ही रहूँगा !

आज जड़ता - पाश, जीवन
बद्ध, घायल युग - विहंगम,
फड़फड़ाता पर, स्वयं
प्राचीर में फँस, जानकर भ्रम,
मौन मरघट स्तब्धता है
स्वर हुआ है आज कुंठित,
सामने बीहड़ भयातंकित
दिशाएँ कुहर - गुंठित,

विश्व के उजड़े चमन में फूल बनकर खिल रहा हूँ,
और खिलता ही रहूँगा !

मैं निरंतर राह नव-निर्माण करता चल रहा हूँ,
और चलता ही रहूँगा !

❀

ज़िन्दगी का कारवाँ

ज़िन्दगी का कारवाँ रुकता नहीं, रुकता नहीं !

ये क्षणिक तूफ़ान तो आते गुज़र जाते,
केश केवल कुछ हवा में उड़ बिखर जाते !
पर, सतत गतिमय क़दम इंसान के कब डगमगाए ?
और ताक़त से इसी क्षण पैर जनबल ने उठाए !
जिन्दगी का कारवाँ यह
आफ़तों के सामने झुकता नहीं, झुकता नहीं !
जिन्दगी का कारवां रुकता नहीं, रुकता नहीं !

रह नहीं सकती हमेशा यामिनी काली,
रोज फूटेगी नई आकाश से लाली !
देख कर जिसको मनुज हर दौड़ कर स्वागत करेगा,
पर, तिमिर से डर भयावह रुग्ण क्या साँसें भरेगा ?
जिन्दगी का कारवाँ यह
भाग्य के निर्मित सितारों को कभी तकता नहीं !
ज़िन्दगी का कारवाँ रुकता नहीं, रुकता नहीं !

मेघ के टुकड़े सरीखा यह अकेलापन,
है बड़ा इससे कहीं चलता हुआ जीवन!
राह चाहे जल-विहीना, वृक्ष हीना, रेतमय हो,
राह चाहे व्यक्तिहीना, घर-विहीना, ज्योति लय हो,
जिन्दगी का कारवाँ यह
हार कर संघर्ष पथ पर भूल कर थकता नहीं!
ज़िन्दगी का कारवाँ रुकता नहीं, रुकता नहीं!

जिस हृदय ने साफ अपना लक्ष्य देख लिया
वह तो बहाएगा सदा ही आश का दरिया!
लड़खड़ाता चल रहा जो मौत की तसवीर है वह,
जो रुका है मध्य पथ में रोग वाहक नीर है वह,
जिन्दगी का कारवाँ यह
मिट निराशा की नदी में डूब वह सकता नहीं!
जिन्दगी का कारवाँ रुकता नहीं, रुकता नहीं!

❀

बढ़ते चलो

राह पर बढ़ते चलो !

दूर मंजिल है तुम्हारी,
पर, कदम होंगे न भारी,
आजतक युग की जवानी ने कभी हिम्मत न हारी !
आँधियों से जूझनेवालो !
निडर हँस-हँस प्रखर बढ़ते चलो !
राह पर बढ़ते चलो !

बल अमिट विश्वास का है,
बल अतुल इतिहास का है,
बल अथक भावी जगत में फिर नए मधुमास का है,
ओ युवक! निज रक्त से नव-दृढ़
इमारत विश्व में गढ़ते चलो !
राह पर बढ़ते चलो !

तम बिखरता जा रहा है,
नव सबेरा आ रहा है,
सृष्टि का कण-कण सृजन का गीत अभिनव गा रहा है,
इसलिए तुम भी नए युग की
प्रतिष्ठा के लिए लड़ते चलो!
राह पर बढ़ते चलो!

❀

नए इंसान से तटस्थ-वर्ग

ओ नए इंसान !
तुमसे एक मुझको बात करनी है;
बात वह ऐसी कि जिसको
वर्ग के मेरे अनेको
मर्द, औरत
वृद्ध, बच्चे, नवयुवक
सब चाहते हैं आज तुमसे पूछना !

और वह है जिन्दगी की
आज से बेहतर, नई, खुशहाल
प्यारी जिन्दगी की बात !

जो कि उस दिन,
याद है मुझको

अधर में रुक गई थी,
क्योंकि तुम संघर्ष में रत थे !
विरोधी चोट से सारे
तुम्हारे अंग आहत थे !
तुम्हारे पास, पर,
उज्ज्वल भविष्यत् का
बड़ा विश्वास था,
आदमी की शक्ति का इतिहास था;
उसकी विजय का चित्र
आँखों में उभरता था,
युगों का स्नेह
इस घायल धरित्री पर बिखरता था,
तभी तो तुम
दमन के बादलों को चीर कर
काली मुसीबत की
भयानक रात का उर भेद कर,
अभिनव किरण बनकर
नए इंसान की संज्ञा
जगत से पा रहे हो !
और उसको तुम
प्रगति पथ पर
सतत ले जा रहे हो !

पास मंजिल है,
उछलता भोर का दिल है।
बड़ा नजदीक साहिल है!

नई चेतना

भरोसा है मुझे निश्चय
तुम्हारे हर इरादे पर,
अकेली बात इतनी है
कि तुम कैसी नई दुनिया बनाओगे ?
हृदय में आज मेरे भी
नई रंगीन दुनिया की नई तसवीर है,
दुनिया को बदलने की प्रसवनी पीर है ?
क्या तुम उसे भी देख
मुझको साथ लेकर चल सकोगे ?
क्योंकि मैं अबतक
विलग, निर्लिप्त तुमसे
मध्यवर्ती,
दूर,
और तटस्थ था !

❀

नई दिशा

चारों ओर है गतिरोध !
पथ अवरुद्ध,
खंडित मान्यताएँ हीन,
जर्जर रूढ़ियों की सामने प्राचीन
फैली चीन की दीवार !
कैसे चढ़ सकोगे और कैसे कर सकोगे पार ?
बोलो ! ये पुरातन नीतियाँ, विश्वास
मृत औ' संकुचित दर्शन पुराना ले,
पुरानी धारणाओं से, पुरानी कल्पनाओं से
कभी क्या जीत पाओगे ?
कभी अपने बनाए लक्ष्य को
साकार कर क्या देख पाओगे ?
बदलते विश्व के सम्मुख
कि अनुसंधान जब विज्ञान के बढ़ते चले जाते,
नए साधन, कलें नूतन व आविष्कार बढ़ प्रतिपल
चुनौती आज गर्वोन्नत जगत की छत खड़े पामीर को देते,

नई चेतना

उठे एवरेस्ट,
गहन प्रशान्त-सागर को,
अनेकों ग्रह-सितारों को,
चमकते दूर चंदा ,को,
नए उन्नत विचारों के सहारे जो
सतत अधिकार मे अपने सदा करते बढ़े जाते !
हुए पूरे न होनी आज चाहों के सभी सपने !
ज़रा उठ खोल तो आँखे
नई फैली दमकती रोशनी के सामने
लो फिर करो उपयोग,
तुम हर वस्तु का उपभोग !
मनुज हो तुम
लिए बल-बुद्धि का भडार,
मनुजता के सभी अधिकार,
प्रगतिका है तुम्हे वरदान,
दुर्दम शक्ति का अभिमान,
तुम्हारा ध्येय है तोड़ो पुरानी ज़िन्दगी के तार,
जिनमें बज न सकती अब मधुर झंकार !
कहाँ तक कर सकोगे शोध ?
है सब व्यर्थ सारा क्रोध !
जब सब डगमगाई हैं दिवारें नींव से
गिर कर रहेगी ही,
कि जब ये आँधियाँ चल दीं क्षितिज से
शीघ्र आ घिर कर रहेंगे ही !
तुम्हें तो छोड़ना है आज यह

नई दिशा

अपनत्व की हर वासना की रूप,
कर दो बन्द तम से ग्रस्त अवनति कूप !
असफल मोह से कर द्रोह,
मिथ्या स्वप्न की माया,
खड़ी बन शून्य की निस्सार धुँधली क्षीण-सी छाया
कि जिसमें है न कोई आज आकर्षण !
निरर्थक क्या ? अरे घातक
सजग हो जा
नहीं तो नाश निश्चित है,
खड़ा हो जा सुदृढ़ चट्टान-सा बनकर
नहीं तो धर्म तेरा रे कलंकित है,
कि बढ़कर रोक ले तूफान
वरना आज पौरुष धैर्य विगलित है !
न हो भयभीत
तेरे सामने हुंकारता है बढ़
ज़माना नव्य,
भावी विश्व की ले कल्पना दृढ़ भव्य !
जनता की प्रखर आवाज़
गूँजी आज,
जो किञ्चित नहीं अब चाहती है
'ताजवालों' का कहीं भी राज !
पीड़ित, त्रस्त, शोषित, सर्वहारा की
उमड़ती बाढ़-सी धारा,
लगाकर यह गगनभेदी सबल नारा—
नई दुनिया बनानी है !

— पैंतीस

नई चेतना

न होगा चिह्न जिसमें एक भी
मृत घृणित पूँजीवाद का,
बरबाद होगा विश्व से हर रूप तानाशाह का,
केवल जगत् नव-साम्य-पथ पर ले सकेगा साँस,
सुख की साँस !
जिसमें आश नूतन ज़िन्दगी की ही भरी होगी,
कि जिसकी राह पर चलकर
धरा सूखी हरी होगी !
मिटा देगा उसी पथ का बटोही
दुःख के पर्वत,
विषमता को गहनतम खाइयाँ सब पाट देगा
कर्म का उत्साह,
नूतन चेतना की प्रेरणा से
ये पुराने सब
किले, दीवार, दरें टूट जाएँगे !

❀

परम्परा

परम्परा, परम्परा, परम्परा !

जकड़ लिया
मिटा दिया

निशान धूल झोंक कर युगों चला लिया,
गुलाम हो गए बना स्वयं अनेक रीतियाँ
प्रथा बनाम रूढ़ियाँ !

नवीन स्वर नहीं सुना ?
नया स्वरूप भी नहीं दिखा ?
बदल गया जहान

सत्य आ गया खरा !
कहाँ गई परम्परा, परम्परा, परम्परा ?

नई चेतना

अंध मान्यता, कठोर मान्यता, असार मान्यता
अरे बता ?
कि धर्म धर्म धर्म की पुकार मच रही
यहाँ वहाँ सभी जगह
कि मार-धाड़,
हो गया मनुज गवाँर,
कौन - सा अमूल्य धर्म वह सुना रहा ?
कुरान ? वेद ? उपनिषद ? पुराण ? बाइबिल ?
सभी बदल चुके !
नवीन ग्रन्थ और एक 'ईश' चाहिए,
कि जो युगीन जोड़ दे नया, नया, नया !
व लहलहा उठे
मनुज-महान-धर्म की सड़ी - गली लता !

सुधार मान्यता, नवीन मान्यता, सशक्त मान्यता,
न व्यर्थ मोह में पड़ो
न कुछ यहाँ धरा !
बदल परम्परा, परम्परा, परम्परा ।

❀

गन्तव्य

यह जीवन का गन्तव्य नहीं !

निष्फल क्षय - ग्रस्त कराहों का,
इन सूनी - सूनी राहों का,
असफल जीवन की आहों का,
स्वप्न-निमीलित, मोह-ग्रसित यह
जाग्रत-उर का मन्तव्य नहीं !
यह जीवन का गन्तव्य नहीं !

वैयक्तिक स्वार्थों पर निर्मित,
आत्म - तुष्टि के साधन सीमित,
पथ पार्थिव सुख पर कर लक्षित,
जन - मन - रागों से दूर कहीं
मानवता का भवितव्य नहीं !
यह जीवन का गन्तव्य नहीं !

नई चेतना

बीते युग पर पछताने का,
या याद पुरानी गाने का,
है ध्येय न आज जमाने का,
युग की वाणी से रही विमुख
एकांत - कला क्या भव्य कहीं ?
यह जीवन का गन्तव्य नहीं !

❀

क्या हुआ ?

वही शिथिल, अस्वस्थ, रुग्ण है शरीर,
क्या हुआ पहन लिया नवीन चीर ?
वही थके चरण;
वही दबे नयन,
कि क्या हुआ क्षणिक सुरा
उतर गई गले ?
निमिष नज़र के सामने
अगर यह छा गया चमन !
सपन बहार आ गई !
समीर है वही गरम गरम,
वही मरण-वरण बुखार,
गिर रही उसी प्रकार
शीश से मनुष्य के
अशेष रक्त-धार !
झनझना रहे
हृदय के तार-तार !

❀

दूर खेत पार

शीत की काली भयावह रात

दूर खेतों पार जर्जर ढूह
जीवन स्तब्ध,
धुंध भीषण, काँपती प्रति रूह
जन-मन दग्ध,
मूक प्राणों के दमन की बात !
शीत की काली भयावह रात !

मर्म पर अंतिम विनाशक चोट
घायल त्रस्त,
ले तिरस्कृत प्राण, रज में लोट
पीड़ा ग्रस्त
बद्ध, शोषित, रक्त से तन स्नात !
शीत की काली भयावह रात !

एक रोदन का करुणतम शोर
गौरव नष्ट,
छा रहा वैषम्य-विष चहुँ ओर
संस्कृति भ्रष्ट,
साँस प्रति कंपन सिहरता गात !
शीत की काली भयावह रात !

नाशकारी गाज सिर पर टूट
मानव दीन,
सभ्यता का अर्थ हिंसा-लूट
ममता हीन,
खो गया तम के विजन में प्रात !
शीत की काली भयावह रात !

❀

युग और कवि

नाश का
क्रन्दन भरा,
यह हार का
दारिद्र्य का
दुर्भिक्ष का
अवरुद्ध पथ का
युद्ध का
मिटता हुआ,
बंधुत्व से हटता हुआ
इतिहास है, इतिहास है !
संस्कृति, कला औ' सभ्यता का
सामने मानों खड़ा उपहास है !
जब आज दानव कर रहा शोषण भयंकर
रूप मानव का बनाए,
और उठती जा रही हैं
स्नेह, ममता की मनुज-उर-भावनाएँ,

बढ़ रही हैं तीव्र गति से
श्वास पर हर
चिर बुभुक्षित मानवों के
दग्ध-जीवन की
विषैली गैस-सी घातक कराहें !
ध्वंस का
निर्मम मरण का,
घोर काला
यातना का
चित्र यह म्रियमाण है !
उजड़ा हुआ है अन्दमन-सा !
और खूनी नादिरी बर्बर दमन-सा !
सिहरता तीखा मरण का गान है !
आदर्श सारे गिर रहे;
मानव बुझा कर ज्ञान का दीपक
निविड़तम-बद्ध दुनिया
देखना बस चाहता है;
क्योंकि उसके पाप अगणित
कौन है जो देख पाएगा ?
धरा पर 'शांति, सुख, नवयुग-व्यवस्था' के लिए
वह लूट लेगा
विश्व का सर्वस्व !
लोभी ! लड़ रहा है
कर रहा है ध्वस्त
कितने लहलहाते खेत,

नई चेतना

मधु जीवन !
रही है मिट मनुजता ही स्वयं
मानो कि की 'हाराकिरी' भगवान ने !
है मद जीवन-दीप की आभा सुनहली।
युग हुआ शापित कलंकित;
किन्तु तुम होना न किञ्चित
धैर्य विगलित, चरण विजड़ित !
कवि उठो !
रचना करो, तुम एक ऐसे विश्व की
जिसमें कि सुख-दुख बँट सके,
निर्बन्ध जीवन की
लहरियाँ बह चलें,
निर्द्वन्द्व वासर
स्नेह से परिपूर्ण रातें कट सकें,
सब की, श्रमात्मा की, गरीबों की
न हो व्यवधान कोई भी !
नए युग का नया संदेश दो !
हर आदमी को आदमी का वेश दो !!

❀

विश्वास

बढ़ो विश्वास ले, अवरोध पथ का दूर होएगा!

तुम्हारी जिन्दगी की आग बन अंगार चमकेगी,
अंधेरी सब दिशाएँ रोशनी में डूब दमकेंगी,
तुम्हारे दुश्मनों का गर्व चकनाचूर होएगा!
बढ़ो विश्वास ले, अवरोध पथ का दूर होएगा!

सतत गाते रहो वह गीत जिसमें हो भरी आशा,
बताए लक्ष्य की दृढ़ता तुम्हारी आँख की भाषा,
विरोधी हार कर फिर तो तुम्हारे पैर धोएगा!
बढ़ो विश्वास ले, अवरोध पथ का दूर होएगा!

मुसीबत की शिलाएँ सब चटककर टूट जाएँगी,
गरजती आँधियाँ दुख की विनत हो धूल खाएँगी,
तुम्हारे प्रेरणा-जल से मनुज सुख-बीज बोएगा!
बढ़ो विश्वास ले, अवरोध पथ का दूर होएगा!

❀

आश्वस्त

ज़िन्दगी के दीप जिसने हैं बुझाए,
और भू के गर्भ से उगते हुए पौधे मिटाए,
शस्य श्यामल भूमि को बंजर किया जिसने,
नवल-युग के हृदय पर
मार पैना गर्म यह खंजर दिया जिसने
उसी से
कर रही है लेखनी मेरी बगावत !
रुक नहीं सकती कि जब तक
गिर न जाएगा धरा पर
आततायी मत्त गर्वोन्नत,
रुक नहीं सकता कभी स्वर
जब मुखर होकर गले से हो गया बाहर,
रुक नहीं सकता कभी तूफ़ान
जिसने व्योम में हैं फड़फड़ाए पर,
रुक नहीं सकता कभी दरिया
कि जिसने खोल आँखें
खूब ली पहचान बहने की डगर !

आश्वस्त

वह तो फैल उमड़ेगा,
कि चढ़कर पर्वतों की छातियों पर
कूद उछलेगा !
सभी पथ में अड़ी भीतें
गरज उन्मुक्त तोड़ेगा !
मुझे विश्वास है साथी—
तुम्हारे हाथ इतने शक्तिशाली हैं
कि प्रतिद्वन्द्वी पराजित हो
अवनि पर लोट जाएगा,
तुम्हारी आँख में उतरी
बड़ी गहरी चमकती तीव्र लाली है
कि जिससे आज मैं आश्वस्त हूँ !
युग का अँधेरा छिन्न होएगा,
सभी फिर से बुझे दीपक
नई युग-चेतना के स्नेह को पाकर
लहर कर जल उठेंगे !
सृष्टि नूतन कोपलों से भर
सुखी हो लहलहाएगी।
कि मेरी मोरनी-सी विश्व की जनता
नए स्वर-गीत गाएगी !
व खेतों में निडर हो
नाचकर पायल बजाएगी !

❀

दीपक जलाओ

आज मेरे स्नेह से दीपक जलाओ !

विश्व कुहराछन्न धूमिल सब दिशाएँ,
चल रही हैं घोर प्रतिद्वन्द्वी हवाएँ,
त्राण मेरे अंक में, आकर समाओ !
आज मेरे स्नेह से दीपक जलाओ !

आज नूतन फूटती आओ जवानी,
मुक्त स्वर में गूँज लो अवरुद्ध वाणी,
यह नवल-सदेश युग का, कवि ! सुनाओ !
आज मेरे स्नेह से दीपक जलाओ !

गिर रही हैं जीर्ण दीवारें सहज में,
टूटती हैं शीर्ण मीनारें सहज में,
हो नया निर्माण, जर्जरता हटाओ !
आज मेरे स्नेह से दीपक जलाओ !

आज मेरी बाहुओं का बल तुम्हारा,
आज मेरा शीश, प्रण अविचल तुम्हारा,
त्रस्त, घायल, सुप्त दुनिया को जगाओ !
आज मेरे स्नेह से दीपक जलाओ !

आभास होता है

आभास होता है—
कि सदियों बद्ध बंधन आज खुलकर ही रहेंगे !
इन धुएँ के बादलों से
आग की लपटें लरज कर
व्योम को निज बाहुओं में घेर लेंगी !
शक्तिमत्ता-मद विषैला-नद जलेगा,
हर उपेक्षित भीम गरजेगा
तुमुल सगर धरा पर !
गढ़ दमन के
राह के फैले हुए आटे सदृश
संघर्ष की भीषण हहरती
आँधियों के बीच उड़ मिट जाएँगे !
विश्वास होता है—
कि दौड़ा आ रहा उन्मुक्त युग-खग,
सब पुरातन जाल जर्जर तोड़कर !

आभास होता है

अब तो जलेगा सत्य का अगार,
जिसके ही लिए यह आज तक
ललायित रहा है
पीड़ितो भूले हुओं का जागता ससार !
मोचन शोक,
दुख हततेज,
गिर रही है भंगिमा
माया विभेदन,
दीखती अभिनव-किरण

❀

आज देखा है

आज देखा है—
मनुज को जिन्दगी से जूझते,
सघर्ष करते ।
वंचना की टूटती चट्टान की आवाज
कानों ने सुनी है,
और पैरों को हुआ महसूस
धरती हिल रही है !
आज मन भी दे रहा निश्चय गवाही—
दुःख-पूर्ण-रात काली
अब क्षितिज पर गिर रही है !
भूमि जननी को हुआ कुछ भास
उसकी आस का संसार
नूतन अंकुरों का उग रहा अबार !
सूखे वृक्ष के आ पास

– चौअन –

आज देखा है

बहती वायु कुछ रुक
कह रही संदेश ऐसा
जो नया बिलकुल नया है !
सुन जिसे खग डाल का
अब चोंच अपनी खोलने को
हो रहा आतुर,
प्रफुल्लित,
फड़फड़ाकर कर पर थकित !
छतनार यह काला धुआँ
अब दीखता हलका
नहीं गाढ़ा अँधेरा है वही कलका !

❀

मुझे भरोसा है

मैं कैद पड़ा हूँ
आज अँधेरी दीवारों में;
दीवारें—जिनमें कहते हैं
रहती कैद हवा है,
रहता कैद प्रकाश !
जहाँ कि केवल फैला
सन्नाटे का राज !
पर, मैं तो अनुभव करता हूँ
बेरोक हवा का,
आँखों से देखा करता हूँ
लक्ष-लक्ष ज्योतिर्मय-पिण्डों को,
मुझको तो खूब सुनाई देती हैं
मेरे साथी मनुजों के
चलते, बढ़ते, लड़ते
कदमों की आवाज !

— छप्पन —

मुझे भरोसा है

मरे साथी मनुजों के
अभियानों के गानो की
अभियानो के बाजों की आवाज !
मुझे भरोसा है—
मेरे साथी आकर
कारा के ताले तोड़ेंगे,
जन-द्रोही सत्ता का
ऊँचा गर्वीला मस्तक फोड़ेंगे !
इंसान नहीं फिर कुचला जाएगा,
इंसान नहीं फिर
इच्छाओं का खेल बनाया जाएगा !

❀

मुख को छिपाती रही

धुआँ ही धुआँ है,
नगर आज सारा नहाता हुआ है !
अँगीठी जली हैं व चूल्हे जले हैं,
विहग बाल-बच्चों से मिलने चले हैं,
निकट खाँसती है छिपी एक नारी
मृदुल भव्य लगती कभी थी,
बनी थी किसी की विमल प्राण प्यारी !
उसी की शकल अब धुएँ में सराबोर है !
और मुख की ललाई
अँधेरी-अँधेरी निगाहों में खोई !
जिसे जिन्दगी से न कोई शिकायत रही अब,
व जिसके लिए है न दुनिया
भरी स्वप्न मधु से लजाती हुई नत,
अनेकों बरस से धुएँ में नहाती रही है।

कि गंगा व यमुना-सा आँसू का दरिया
बहाती रही है !
फटे जीर्ण दामन में मुख को छिपाती रही है !
मगर अब चमकता है
पूरब से आशा का सूरज,
कि आती है गाती किरन,
मिटेगी यह निश्चय ही
दुख की शिकन !

❀

नया समाज

करवटें बदल रहा समाज,
आज आ रहा है लोकराज!
ध्वस्त सर्व जीर्ण-शीर्ण साज,
धूल चूमते अनेक ताज!

आ रही मनुष्यता नवीन,
दानवी प्रवृत्तियाँ विलीन!
अंधकार हो रहा है दूर;
खड-खंड और चूर-चूर!

रश्मियों ने भर दिया प्रकाश,
जिन्दगी को मिल गई है आश।
चल पड़ा है कारवाँ सप्राण
शक्तिवान, संगठित, महान!

नया समाज

रेत-सा यह उड़ रहा विरोध,
मार्ग हो रहा सरल सुबोध;
बढ़ रहा प्रबल प्रगति-प्रसार,
बिजलियों सदृश चमक अपार !

देख काल दब गया विशाल,
आग जल उठी है लाल-लाल !
उठ रहा नया गरज पहाड़,
मध्य जो वह खा गया पछाड़ !

पिस गया गला-सड़ा पुराण,
बन रहा नवीन प्राणवान !
गूँजता विहान-नव्य-गान;
मुक्त औ' विरामहीन तान !

❀

युगान्तर

आँधी उठी है समुन्दर किनारे
बढ़ती सतत कुछ न सोचे-विचारे,
लहरें उमड़तीं बिना शक्ति हारे
रफ्तार यह तो समय की!

मानव निकलते चले आ रहे हैं,
उन्मत्त हो गीत नव गा रहे हैं,
रंगीन बादल बिखर छा रहे हैं।
झंकार यह तो समय की!

जर्जर इमारत गिरी डगमगाकर,
आमूल विष-वृक्ष गिरता धरा पर,
बहता पिघल पूर्ण प्राचीन पत्थर,
है मार यह तो समय की!

युगान्तर

रोड़े बिछे थे हजारों डगर में
नौका कभी भी न डोली भँवर में,
बढ़ती गई व्यक्ति-झंझा समर में
पतवार यह तो समय की !

इंसान लेता नई आज करवट,
सम्मुख नयन के उठा है नया पट,
गूँजी जगत में युगान्तर की आहट,
ललकार यह तो समय की !

❀

छलना

आज सपनों की नहीं मैं बात करता हूँ !
चाँद-सी तुमको समझकर
अब न रह-रह कर
विरह में आह भरता हूँ !
नहीं है
रुग्ण मन के प्यार का उन्माद बाकी,
अब न आँखों में
तुम्हारी झिलमिलाती रूप की झाँकी !
कि मैंने आज
जीवित सत्य की तसवीर देखी है,
जगत की
जिन्दगी की
एक व्याकुल दर्द की
तसवीर देखी है !

छलना

किसी मासूम की उर-वेदना
बन धार आँसू की
धरा पर गिर रही है,
और चारों ओर है जिसके
अँधेरे की घटा,
जाड़ रूठ बैठी है सबेरे की छटा !
उसको मनाने के लिए अब
मैं हजारों गीत गाऊँगा,
अँधेरे को हटाने के लिए
नव ज्योति प्राणों में सजाऊँगा।
न जबतक
सृष्टि के प्रत्येक उपवन में
बसन्ती प्यार छाएगा,
न जबतक
मुसकराहट का नया साम्राज्य
धरती पर उतर कर जगमगाएगा,
कि तबतक
पास आने तक न दूँगा
याद जीवन में तुम्हारी;
क्योंकि तुम कर्तव्य से
संसार का मुख मोड़ देती हो।
हजारों के
सरल शुभ-भावनाओं से भरे
उर तोड़ती हो।

मत कहो

आज भय की बात मुझसे मत कहो,
आज बहकी बात मुझसे मत कहो !

प्राण मे तूफान-से अरमान हैं,
कंठ में नव-मुक्ति के नव गान हैं !

ज्वार तन मे स्वस्थ यौवन का बहा,
नष्ट हों बंधन, सबल उर ने कहा !

है तरुण की साधना, गतिरोध क्या ?
है तरुण की चेतना, अवरोध क्या ?

द्वन्द्व भीषण, है चुनौती सामने,
बीज भावी क्रान्ति बोती सामने !

बद्ध प्रतिपग पर समस्त समाज है;
आग में तपना सभी को आज है !

आज जन-जन को शिथिलता छोड़ना,
है नहीं कर्त्तव्य से मुख मोड़ना !

मत कहो

इस लगन की अग्नि से जर्जर जले
रक्त की प्रति बूँद की सौगन्ध ले—

प्राण का उत्सर्ग करना है तुम्हे,
विश्व भर में प्यार भरना है तुम्हे !

धर्म मानव का बसाना है तुम्हे,
कर्म जीवन का दिखाना है तुम्हे,

मर्म प्राणो का बताना है तुम्हे,
ज्योति से निज, तम मिटाना है तुम्हे !

विश्व नव-सस्कृति प्रगति पर बढ़ चला,
भ्रष्ट जीवन मिट समय के संग गला !

काल की गति, भाग्य का दर्शन मरण,
आज है प्रत्येक स्वर के नव-चरण

जीर्णता पर हँस रही है न्यूनता,
खिल रही कलियाँ भ्रमर को मधु बता !

ध्वस के अतिम विजन-पथ पर लहर,
सृष्टि के आरम्भ के जाग्रत-प्रहर !

जागरण है, जागते ही तुम रहो,
नींद में सोए हुए अब मत कहो !

आज भय की बात मुझसे मत कहो,
आज बहकी बात मुझसे मत कहो !

*

नया युग

ओ ! मनुजता की
करुण, निस्पंद, बुझती ज्योति
मेरे स्नेह से भर प्रज्ज्वलित हो जा !
निविड़-तम-आवरण सब
विश्व-व्यापी जागरण में आ सहज खो जा !
हिमालय-सी भुजाओं में भरी है शक्ति
जन-जन रोक देंगे आँधियों को,
फेंक देंगे दूर बढ़ती ज्वार की लहरें !
नई विकसित
युगों की साधना की फूटती आभा,
नई पुलकित
युगों की चेतना की जागती आशा,
दलित, नत, भग्न ढूहों से
उठी है आज नव-निर्माण की दृढ़ प्रेरणा !

नया युग

ध्रुव सत्य
होगी कल्पना साकार !
अभिनव वेग से संसार का कण-कण
नया जीवन, नया यौवन, लहू नूतन,
सुदृढ़तम शक्ति का संचार पाएगा।
नया युग यह प्रखर दिनकर सरीखा ही नहीं
पर, है पहुँच आगे बड़ी इसकी
घने फैले हुए जगल
भयानक मत्त 'एवर-ग्रीन',
भूतल ठोस के नीचे,
अतल जल के
जहाँ बस है नहीं रवि का
वहाँ तक है नए युग के विचारों का
अथक संग्राम।
कैसे बच सकोगे ओ, पलायन के पुजारी।
आज अपनी बुद्धि की हर गाँठ को लो खोल,
वढकर आँकलो
नूतन सजग युग का समझकर मोल !

❀

पदचाप

पड़ रहे नूतन कदम फौलाद-से दृढ़,
और छोटी पड़ रही छाया
नए युग आदमी की आज!
धरती सुन रही पदचाप
अभिनव जिन्दगी की!
बज रही झंकार,
मुखरित हो रहा संसार,
नव नव शक्ति का संचार
परिवर्तन!

बदलती एक के उपरान्त
सुन्दर तर जगत् की प्रति निमिष तसवीर,
घटती जा रही है पीर,
जागी आदमी की आज तो
सोई हुई तकदीर !
रुक गया मेरे जिगर का दर्द,
बरसों का उमड़ता नैन का यह नीर !
गीले नेत्र करुणा पूर्ण
तुझ को देखते विश्वास से दृढ़तर,
यही आशा लगाए हैं
कि जब यह उठ रहा परदा पुराना
तब नया ही दृश्य आएगा,
कि पहले से कहीं खुशहाल
दुनिया को दिखाएगा।

*

भोर का आह्वान

खुल रही आँखें
नई इस जिन्दगी के भोर में !
उठ रहा उठते दिवाकर संग जन-समुदाय,
भर कर भावना बहुजन हिताय !

अंतर से निकलती आ रही हैं
विश्व के कल्याण की—
काली अँधेरी रात के तारों सरीखी,
एक के उपरान्त अगणित शृंखला-सी
नव्य-जीवन की सुनहरी आब-सी स्वर्गिक दुआएं !

देख ली है आज
नयनों ने नए युग की धधकती आग,
जिसकी उड़ रहीं चिनगारियाँ
हर ग्राम-वन-सागर-नगर के व्योम में !

उस घास की गजी सरीखा
जो लपट से ग्रस्त धू-धू जल रही है.
ध्वस्त होता जा रहा छल, झूठ, आडम्बर !
कि जिसके वक्ष पर यह हो रहा है रोशनी-सा
दौड़ता अभिनव-किरण-सा आज मन्वंतर ।
कि विद्युत् वेग भी पीछे लरजकर रह गया,
लाखो हरी पैनी हवाएँ तक ठिठक कर रह गईं,
लाखो उबलते भूमि के ज्वालामुखी तक जम गए,
बह न पाया एक पग भी देखकर लावा !
गगन के फट गए बादल
व खंडित हो गई सारी गरज !
भव का भयानकतम भविष्यत् भी
भरे भय भग गया ।
विश्वास है—
यह अब न आएगा कभी,
ऐसा ग्रहण फिर ग्रस न पाएगा कभी
जन-चेतना के सूर्य को ।
रे आज सदियों रुद्ध जनता-कंठ सहसा खुल गया
संसार के इस शोर में !
खुल रही आँखें
नई इस जिन्दगी के भोर में

❀

निरापद

नई रोशनी है,
नई रोशनी है !
निरापद हुआ आज जीवन,
निराशा पुरावृत विसर्जन !
विषादित-युगों की निशा भी गगन से
अँधेरा उठाकर भगी इस जलन से।
महाबल विपुल अब भुजाएँ उठाकर
विरोधी सभी ताकतों को
गरजकर बिगड़ क्रुद्ध ललकारता है !
गुनाहों के पर्वत पिघल कर धँसे जा रहे हैं !
(सुमन शुष्क उपवन में खिलते चले जा रहे हैं !)
बदलते जगत पर
पुरातन दुदिल नीति हरगिज
नहीं थोपनी है !
नई रोशनी है !

❀

सुर्खियाँ निहार लो !

नए विचार लो !
समाज की गिरी दशा सुधार लो,
सुधार लो !

रुका प्रवाह फिर बहे,
सप्राण गीति-स्वर कहे
हृदय अपार स्नेह-धन
भरें उठें असंख्य जन
प्रभात को धरा जगो पुकार लो,
पुकार लो !

युग-परिवर्तन

नए प्रभात की प्रथम किरण
विलोक मुसकरा रहा गगन !
इधर - उधर सभी जगह
नवीन जिन्दगी के फूल खिल गए,
सिहर - सिहर कि झूम - झूम
एक दूसरे को चूम - चूम मिल गए !

धूल बन गया पहाड़ अंधकार का,
अटूट वेग है जमीन पर नई बयार का !
कि साथ - साथ उठ रहे चरण,
कि साथ - साथ गिर रहे चरण !
नए प्रभात की नई बहार बीच
जगमगा उठा गगन !
कि झिलमिला उठा गगन !!

सुर्खियाँ निहार लो !

वतन सुसंगठित रहे,
न एक जन दमित रहे,
न भूख-प्यास शेष हो,
बना नवीन वेश हो,
समय बहाल, सुर्खियाँ निहार लो,
निहार लो !

विभोर हर्ष - धार में,
सफेद लाल प्यार में,
बहो, बहो, बहो, बहो !
मनुष्यता की जय कहो !
बनी नई कुटीर है, विहार लो,
विहार लो !

युग-परिवर्तन

उर्वरा धरा सुहाग पा गई,
शरीर में हरी निखार आ गई,
निहार लो उभार रूप का
पड़ा है सिर्फ रेशमी महीन आवरण
अतेज धूप का।

बिजलियों ने कर लिया शयन,
हहरती आँधियाँ पड़ीं शरण,
विकास का सशक्त काफिला नवीन
कर रहा सुदृढ़ भवन - सृजन!

बेशरम रुके खड़े हैं राह पर,
कि कापुरुष के कंठ से
निकल रहा कराह - स्वर,
सभीत दुर्बलों के बंद हैं नयन,
व मोच खा गए चरण!

❀

नई संस्कृति

युग-रात्रि निश्चय
विश्व के प्रत्येक नभ से मिट गई !
अभिनव प्रखर - स्वर्णिम - किरण बन
दमदमाती आ रही संस्कृति नई !
सामने जिसके विरोधी शक्तियाँ तम की
बिखरती जा रहीं,
पर, ये विरोधी शक्तियाँ कोई थकी जर्जर नहीं,
किन्तु इनसे जूझने का आ गया अवसर !
यही वह है समय
जब बल नया पाता विजय !

हमला जरूरी है,
कि देशों, जातियों, वर्गों
सभी की यह परस्पर की
मिटाना आज दूरी है !
इसीके ही लिए
प्राचीन-नूतन द्वन्द्व की आवाज है,
प्राचीन जो म्रियमाण,
जिसका आज विशृंखल हुआ सब साज है !
जिसकी रोशनी सारी नए ने छीन ली,
और जिसके हाथ से निकला समस्त समाज है !
बस पास केवल एक धुँधली याद है,
जिसका तड़पता शेष यह उन्माद है--
'बीते युगों में हम सुखी थे;
किंतु अब रथ सभ्यता का
तीव्र गति से बढ़ पतन - पथ पर
जगत का नाश करने हो रहा आतुर।'
हमें अब जान लेना है
विनाशी तत्त्व घातक हैं वही
जो आज यह झूठा तिमिर करते विनिर्मित,
और रक्षक-दीप बनने का
विफल गीदड़ सरीखा स्वाँग भरते हैं !
कि धोखे से उदर अपना भरा हर रोज करते हैं।
भला ऐसे मनुज
क्या लोक के कुछ काम आते हैं ?
नई हर बात से मुख मोड़ लेते हैं,

नई संस्कृति

समय के साथ चलना भूल जाते हैं !
नजर से क्रीट, वेबीलोन के खण्डहर गुजरते हैं,
बहाना है न उनको देखकर आँसू,
न उनकी अब प्रशंसा के हजारों गीत गाने है !
नहीं बीते युगों के दिन बुलाने हैं !
नया युग आ रहा है जो
उसी के मार्ग में हमको बिछाने फूल हैं कोमल,
उसीके मार्ग को हमको बनाना है सरल।
जिससे नई संस्कृति - लता के कुंज में
हम सब खुशी का गा सकें नूतन तराना,
भूलकर दुख - दर्द जीवन का पुराना ! ✓

❀

गंगा बहाओ

आज ऊसर भूमि पर गंगा बहाओ !

उच्च दृढ़ पाषाण गिर-गिर कर चटकते,
रेत के कण नग्न धरती पर चमकते,
अग्नि की लहरें हवा में बह रही हैं;
रूप घन का शांतिमय जग को दिखाओ !
आज ऊसर भूमि पर गंगा बहाओ !

त्रस्त नत मानव प्रकम्पित पात से झर,
झुक गए सब आततायी के चरण पर,
थूक ठोकर नाश दुख निर्मम मरण पर;
आत्म-धन उत्सर्ग की ध्रुव लौ जगाओ !
आज ऊसर भूमि पर गंगा बहाओ !

बह चुकी हैं खून की नदियाँ, बिरानी
भू हुई, सत् की असत् ने कुछ न मानी,
और फूटा भय-ग्रसित-रक्तिम-सबेरा,
सूर्य पर छाए हुए बादल हटाओ !
आज ऊसर भूमि पर गंगा बहाओ !

❀

नई रेखाएँ

इन धुँधली-धुँधली रेखाओं
पर फिर से चित्र बनाओ मत !

दुनिया पहले से बदल गई,
आभा फैली है नई-नई,
यह रूप पुराना, नहीं-नहीं !

आँखों से ओझल है कल की
संस्कृति की गंगा का पानी,
टूटी-टूटी-सी लगती है
गत वैभव की शेष कहानी,

जिसमें मन से झूठी, कल्पित
बातों को सोच मिलाओ मत !
इन धुँधली-धुँधली रेखाओं
पर फिर से चित्र बनाओ मत !

नई चेतना

पहले के बादल बरस चुके,
अब तो खाली सब थके रुके,
यह गरज बरसने वाली कब ?

नव-अंकुर फूट रहे रज से
भर कर जीवन की हरियाली,
निश्चय है, फूटेगी नभ से
जनयुग के जीवन की लाली,

निस्सार, मिटा, जर्जर, खोया
फिर से आज अतीत बुलाओ मत !
इन धुंधली-धुंधली रेखाओं
पर फिर से चित्र बनाओ मत !

❀

भविष्य के निर्माताओ !

जिन सपनों को साकार करोगे तुम
उन पर मुझको विश्वास बड़ा,
मैं देख रहा हूँ
कदम-कदम पर आज तुम्हारे
स्वागत को युग का इन्सान खड़ा !
जिसके फौलादी हाथों में
हँसते फूलों की खुशबू वाली माला है,
जिसने जीवन की सारी जड़ता और निराशा का
वारा-न्यारा कर डाला है !

नई चेतना

वह माला वह इंसान
तुम्हारे उर पर डालेगा;
क्योंकि तुम्हारा वक्षस्थल
जन-जन की पीड़ा से बोझिल है,
क्योंकि तुम्हारे
फौलादी तन का मखमल जैसा मन
युग-व्यापी क्रन्दन से
हो-हो उठता चंचल है !
तुम ही हो जो
इन फूलों की कीमत समझोगे,
फिर सारी दुनिया में
हँसते फूलों का उपवन
नभ के नीचे लहराएगा !
मानव फूलों को प्यार करेगा,
अपनी 'श्रद्धा' का शृंगार करेगा,
बच्चों को चूमेगा,
उनके साथ रोज हरे लॉन पर
'घोड़ा-घोड़ा' खेलेगा।
नयनों में आँसू तो आएँगे
पर, वे बेहद मीठे होंगे !
मरघट की आग जलेगी यों ही
पर, उसमें न किसी के
अरमान अधूरे होंगे !
जैसे अब मिलना दुर्लभ है
'ईश' जगत में

वैसे ही तब भी होगा,
पर, हमको-तुमको
(सच मानो !)
उसकी इतनी चिन्ता ना होगी !
उसका और हमारा अन्तर
निश्चय ही मिट जाएगा,
जिस दिन मानव का सपना
सच हो जाएगा !

❀

मेघ-गीत

उमड़ते-गरजते चले आ रहे घन
घिरा व्योम सारा कि बहता प्रभंजन
अँधेरी उभरती अवनि पर निशा-सी
घटाएँ सुहानी उड़ीं दे निमन्त्रण !

कि बरसो जलद रे जलन पर निरंतर
तपी और झुलसी विजन-भूमि दिन भर,
करो शान्त प्रत्येक कण आज शीतल
हरी हो, भरी हो प्रकृति नव्य सुन्दर !

झड़ी पर, झड़ी पर, झड़ी पर, झड़ी हो,
जगत मंच पर सौम्य शोभा खड़ी हो !
गगन से झरो मेघ ओ ! आज रिमझिम,
बरस लो सतत, मोतियों-सी लड़ी हो !

हवा के झकोरे उड़ा गध - पानी
मिटा दी सभी उष्णता की निशानी,
नहाती दिवारे नई औ' पुरानी
डगर में कहीं स्रोत चचल रवानी !

कृषक ने पसीने बहाए नहीं थे,
नवल बीज भू पर उगाए नहीं थे,
सृजन - पथ पर हल न आए अभी थे
खिले औ' पके फल न खाए कहीं थे !

दृगों को उठा कर, गगन में अड़ा कर
प्रतीक्षा तुम्हारी सतत लौ लगा कर—
हृदय से, श्रवण से, नयन से व तन से।
घिरो घन, उड़ो घन घुमड़कर जगत पर !

अजब हो छटा बिजलियाँ दमदमाएँ,
अँधेरा सघन, लुप्त हों सब दिशाएँ
भरन पर, भरन पर सुना राग नूतन
नया प्रेम का मुक्त - संदेश छाए।

विजन शुष्क आँचल हरा हो, हरा हो !
जवानी भरी हो सुहागिन धरा हो !
चपलता बिछलती, सरलता शरमती,
नयन स्नेहमय ज्योति, जीवन भरा हो !

❀

बरगद

स्तब्धता सुनसान
पथ वीरान,
सीमाहीन नीला व्योम !
मटमैली धरा पर वृक्ष बरगद का झुका
मानों की है प्राचीनता साक्षात् !
निर्बल वृद्ध-सा जर्जर शिथिल
उखड़ी हुई साँसें,
जड़ें भू पर बिछी हैं
और गिरने के मरण-क्षण पर
भयंकर स्वप्न ने कंपित किया झकझोर क
भय की बना मुद्रा
खड़ा यों कर दिया !

उड़कर धूल कहना चाहती है—
'ओ गगनचुम्बी ! गिरो
पूरी न आकांक्षा हुई
आकर मिलो मुझसे विवश होकर धराशायी !
न जाना मूल्य लघुता का
किया उपहास !'

जड़ के पास
खंडित औ' कुरूपा
जो रँगा सिन्दूर से हनुमान-सा पाषाण
टिक कर गोद में बैठा
कि जिसकी अर्चना करते मनुज कितने
नमन हो परिक्रमा करते,
व आधी रात को आ
श्वान जिसको चाटते

कवि

युग बदलेगा कवि के प्राणों के स्वर से,
प्रतिध्वनि आएगी उस स्वर की घर-घर से !

कवि का स्वर सामूहिक जनता का स्वर है,
उसकी वाणी आकर्षक और निडर है !
जिससे दृढ़-राज्य पलट जाया करते हैं,
शोषक अन्यायी भय खाया करते हैं,
उसके आवाहन पर, नत शोषित पीड़ित,
नूतन बल धारण कर होते एकत्रित !
जो आकाश हिला देते हुंकारों से
दुख-दुर्ग ढहा देते तीव्र प्रहारों से !

कवि के पीछे इतिहास सदा चलता है,
ज्वाला में रवि से बढ़कर कवि जलता है!
कवि निर्मम युग-संघर्षों में जीता है,
कवि है जो शिव से बढ़कर विष पीता है!!

उर-उर में जो भाव-लहरियों की धड़कन,
मूक प्रतीक्षा-रत प्रिय भटकी गति बन-बन,
स्नेह भरा जो आँखों में माँ की निश्छल,
लहराया करता कवि के दिल में प्रतिपल।

खेतों में जो बिरहा गाया करता है,
या कि मिलन का गीत सुनाया करता है,
उसके भीतर छिपा हुआ है कवि का मन!
कवि है जो पाषाणों में भरता जीवन!